7

मुग़ल चित्रकला

पिछले अध्याय में आपने मध्यकालीन चित्रकला के बार में जाना। प्रस्तुत पाठ में हम मुग़ल चित्रकला के बारे में जानेंगे। भारत में सोलहवीं तथा सत्रहवीं सदी के मध्य मुग़ल शासकों के समय जो चित्रकला-शैली फली-फूली वह मुग़ल चित्र-शैली के नाम से विख्यात हुई। दूसरे मुग़ल शासक हुमायूँ लघु चित्रकला परंपरा को फारस से लाये और भारत में लगभग तीन शताब्दियों तक प्रचलन में रही। भारत का पहला मुग़ल शासक बाबर इस कला का पारखी था। जो सौंदर्य के प्रति संवेदनशील व्यक्ति था। उसके दरबार में कुछ चित्रकार रहे होंगे लेकिन उस काल की चित्रकला उपलब्ध नहीं है। बाबर के पुत्र हुमायूँ के शासन काल में ईरान के प्रसिद्ध चित्रकार मीर सैयद अली तथा अब्द-अल-समद उसके दरबार में शामिल हो चुके थे। अकबर (1556-1606) के शासनकाल में मुग़ल चित्रकारों ने अपनी एक विशिष्ट शैली विकसित कर ली। इस शैली का जन्म ईरानी तथा भारतीय कला तत्त्वों के सामंजस्य से हुआ। अकबर की शिल्पशाला में लगभग 150 कलाकार थे, जिनमें अधिकांश हिन्दू थे जो मीर सैयद अली तथा अब्द-अल-समद जैसे ईरानी शिल्प-गुरुओं के पर्यवेक्षण में कार्य करते थे। भारतीय तथा ईरानी साहित्य के और महान ऐतिहासिक विभूतियों की रचनाओं के अनुवाद इसी काल में हुए तथा इन पाण्डुलिपियों का चित्रांकन भी हुआ।

मुग़ल शैली के चित्रों की प्रमुख विशेषताएँ हैं- यथार्थपूर्ण चित्रण, अत्यंत सावधानीपूर्वक किया गया परिष्कृत रेखांकन, संयोजन में निपुणता तथा कोमल और समृद्ध रंगयोजना। यह राजसी तथा धर्मनिरपेक्ष प्रकृति और चित्रकार के गहरे अुनभव तथा निरीक्षण-क्षमता से जुड़ी कला है। विदेशी यात्रियों द्वारा मुग़ल दरबार में लाए गए यूरोपीय चित्रों तथा उत्कीर्ण कलाकृतियों के प्रभाव से मुग़ल चित्रों में 'शेडिंग' तथा 'परिप्रेक्ष्यता' जैसे तत्त्वों को बढ़ावा मिला। एक ही लघु चित्र अनेक चित्रकारों द्वारा बनाए जाते थे तथा अपनी विशेषता के अनुसार एक साथ रेखांकन, रंगांकन तथा भूदृश्य-चित्रण आदि बनाने में दक्ष होते थे।

सम्राट अकबर का पुत्र जहाँगीर स्वयं एक महान कला-पारखी और कला-संग्राहक था। उसे अपनी कला परख और समझ पर बड़ा मान था। उसके शासन काल में अनेक व्यक्तिचित्र (Portrait), दरबार के दृश्य तथा उसकी व्यतिगत जीवन की घटनाओं पर विभिन्न श्रेष्ठ चित्रों का सृजन हुआ। जहाँगीर उच्च कोटि का प्रकृति प्रेमी भी था। उसके समय में पशु-पक्षियों का अध्ययन तथा फूलों के बहुत की उत्कृष्ट श्रेणी के चित्र बनाए गए।

शाहजहाँ का शासनकाल महान वास्तुशिल्प निर्माण का समय था। उस समय बनाए गए चित्रों में श्रेष्ठ तकनीकी दक्षता के दर्शन होते हैं। इन चित्रों में शाही दरबार की शान-शौकत का चित्रण एवं छविचित्र प्रमुख हैं।

अंतिम मुग़ल शासक औरंगजेब के अधीन चित्रकला को गहरा आघात लगा। उसके कठोर धार्मिक पूर्वाग्रहों के कारण सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बने उच्च श्रेणी के मुग़ल लघुचित्र कम ही देखने को मिलते हैं। शाही संरक्षण के अभाव में मुग़ल दरबार के चित्रकार हैदराबाद, राजस्थान तथा पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र की रियासतों की ओर पलायन कर गए। अठारहवीं सदी के औरंगजेब के वंशज विलासी और प्रभावहीन थे। अत: इस काल तक आते आते मुग़ल चित्रकला अपनी प्रारंभिक ख्याति खोने लगी थी।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- मुग़लकालीन लघुचित्रों की पृष्ठभूमि तथा विकास का संक्षेप में उल्लेख कर सकेंगे;
- कुछ महत्वपूर्ण सूचीबद्ध मुग़ल लघुचित्रों के नाम लिख सकेंगे;
- अन्य लघुचित्रों से मुग़ल लघुचित्रों को अलग पहचान कर सकेंगे;
- लघुचित्रों की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध लघुचित्रों के बनाने की पद्धति, प्रयुक्त सामग्री, स्थान और शैली का वर्णन कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों को बनाने वाले चित्रकारों के नाम प्रस्तुत कर सकेंगे;
- मुग़ल कला के उद्भव पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- चित्रों के रंगों और संयोजनों की सराहना कर सकेंगे।

7.1 गैंडे का शिकार करते बाबर, अकबर काल

प्रिय शिक्षार्थी, आप अकबर काल की कलाकृतियों को जानें।

बुनियादी सूचना

बाबर एक शिक्षित एवं तैमूर वंशीय शासक था। उनके 'बाबरनामा' में अपने अनुभव तथा संस्मरण जिस प्रकार व्यक्त किए हैं; उससे उनकी प्रकृति समाज, राजनीति और अर्थशास्त्र के प्रति रुचि का पता चलता है। उसके संस्मरणों में न केवल उसके जीवन से संबंधित घटनाओं का पता चलता है, बल्कि उस क्षेत्र के इतिहास तथा भूगोल के बारे में भी विवरण मिलते हैं। इस चित्र (7.1)

में बाबर ने एक गैंडे का शिकार किया है। हाथी के आक्रामक व्यवहार से ज्ञात होता है कि उसे शिकार के लिए किस प्रकार प्रशिक्षित किया गया है। लघुचित्र छोटे आकार में बनाए जाने वाले चित्र थे, जिनमें चित्रकार अक्सर छोटे-से-छोटे विवरण भी चित्रित करते थे। सामान्यत: ये चित्र किसी पुस्तक या चित्र-संग्रह के अंग होते थे।

चित्र 7.1: गैंडे का शिकार करते बाबर

शीर्षक	:	**गैंडे का शिकार करते बाबर**
चित्रकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	कागज पर जलरंग चित्रण
काल	:	1530 ईसवी
शैली	:	लघुचित्र/ईरानी शैली
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

यह चित्र 'बाबरनामा' की पाण्डुलिपि से लिया गया है। चित्र कागज पर जलरंगों से बनाया गया है। यह एक लघुचित्र है। बाबर शिकार तथा युद्ध के समय चित्रकारों को भी अपने साथ ले जाता था। इस चित्र में बाबर को गैंडे का शिकार करते दर्शाया गया है। चित्र की पृष्ठभूमि में पहाड़ियाँ तथा वृक्ष दिखाए गए हैं तथा परिप्रेक्ष्यता के सिद्धांत का भी पालन किया गया है। चित्र में गहराई का प्रभाव उत्पन्न करने हेतु पृष्ठभूमि में चित्रित आकृतियों को अग्रभूमि में चित्रित आकृतियों से छोटा चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में हल्के रंग एवं अग्रभूमि में रंगों के गहरे शेड्स के प्रयोग से भी परिप्रेक्ष्यता दिखाने में सहायता ली गई है। पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों का चित्रण बहुत ही यथार्थवादी ढंग से प्रवाही रेखाओं द्वारा किया गया है। विविधता की दृष्टि से यह दृश्य अत्यन्त समृद्ध है। चित्र संयोजन अनेक छोटे-छोटे विवरणों से भरा है; जैसे- आकृतियों की सक्रियता, गतिशीलता तथा अलंकृत वस्त्र आदि। हाथी को पूर्ण विवरण सहित कोमल रेखाओं द्वारा चित्रित बेल-बूटों से अलंकृत किया गया है। झूल के कपड़े की किनारी गहरे रंग से चित्रित है। हाथी गैंडे के पीछे भाग रहा है। चित्रित किए गए प्रत्येक चेहरे में भाव और शक्ति की अभिव्यंजना ने इस चित्र को मुग़ल काल में बने एक महान लघुचित्र की श्रेणी में ला खड़ा किया है।

चित्र की पृष्ठभूमि एवं अग्रभूमि में चित्रित मानव-आकृतियों को दर्शाया गया है जो चारों ओर से उसे घेरकर गैंडे को फँसाने का प्रयत्न कर रहे हैं और गैंडा उनके जाल से बचने हेतु क्रोधित अवस्था में इधर-उधर भाग रहा है। यह चित्र हमारे सामने एक वास्तविक शिकार का बहुत ही यथार्थवादी दृश्य प्रस्तुत करता है। मुग़ल चित्रकार सर्वप्रथम आसमान तथा उसके बाद पृष्ठभूमि चित्रित करते थे। इसके उपरांत आकृतियों को रेखांकित कर रंग भरे जाते थे। रंगों की दो या तीन परत लगाई जाती थी तथा रंग की प्रत्येक परत लगाने के उपरान्त उसे सुखाकर अच्छी तरह घिसा जाता था। इस चित्र में चित्रकार ने प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया है।

पाठगत प्रश्न 7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. उपर्युक्त लघुचित्र (7.1) का विषय क्या है

   (i) शिकार का दृश्य (ii) बाजार का दृश्य

   (iii) व्यस्त सड़क (iv) सूर्योदय का दृश्य

2. मुग़ल लघुचित्रों में किस शैली का प्रभाव है

   (i) पश्चिमी (ii) फारसी

   (iii) आधुनिक (iv) इटालियन

7.2 बाज के साथ राजकुमार (जहाँगीर काल)

आपने अकबर काल की शैली के बारे में जाना है। अब आप जहाँगीर काल की शैली जानेंगे।

बुनियादी सूचना

उस्ताद मंसूर नामक महान चित्रकार द्वारा बनाया गया यह लघु चित्र 'बाज के साथ राजकुमार' जहाँगीर काल का है। जहाँगीर के दरबार में उस्ताद मंसूर ख्यातिलब्ध चित्रकार थे जो लघु चित्र बनाने में माहिर थे। यह चित्र मुग़लकाल में उनके द्वारा बनाया गया एक उच्च श्रेणी का लघुचित्र है।

चित्र 7.2: बाज के साथ राजकुमार

शीर्षक	:	**बाज के साथ राजकुमार**
चित्रकार	:	उस्ताद मंसूर
माध्यम	:	कागज पर जलरंग चित्रण
शैली	:	लघुचित्र शैली
संग्रह	:	लॉस एँजेल्स, काउंटी म्यूजियम ऑफ आर्ट संग्रहालय, यू.एस.ए.
आकार	:	ऊँचाई 14.2 सेमी., चौड़ाई 8.5 सेमी.

सामान्य विवरण

जहाँगीर अपने प्रकृति-प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे। इस चित्र का सृजन करने वाले चित्रकार उस्ताद मंसूर अपनी कोमल रंगयोजनाओं तथा ब्रश द्वारा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म विवरण चित्रित करने हेतु जाने जाते हैं। 'बाज के साथ राजकुमार' उस्ताद मंसूर द्वारा बनाए गए चित्रों में से एक अपूर्व चित्रांकन का उदाहरण है। इस चित्र में सपाट रंग लगाए गए हैं। हरा, लाल, पीला तथा काला आदि गहरे व चमकदार रंग प्रयुक्त किए गए हैं। राजकुमार ने एक हाथ में दस्ताना पहना है और वह उस पर बाज को साधे हुए आकाश की सपाट पृष्ठभूमि में खड़ा है। यद्यपि कोई क्षितिज रेखा चित्रित नहीं की गई है, परन्तु बादल तथा पक्षियों की आकृतियाँ चित्र में आकाश का प्रभाव उत्पन्न कर रही हैं। उस्ताद मंसूर अपने पक्षी-चित्रण और अध्ययन के लिए प्रसिद्ध थे। बाज के पंजे एक अलंकृत डोरी द्वारा बांधे गए हैं। पक्षी के शरीर की गोलाई का रेखाओं द्वारा निरूपण अद्‌भुत है। बाज और राजकुमार दोनों के चेहरों पर सौम्यता तथा प्रसन्नता का भाव है। राजकुमार में अपने हाथ पर बैठे बाज के लिए सराहना का भाव है। चित्र में राजकुमार के चेहरे को एक ओर देखते हुए चित्रित किया गया है। चित्रकार ने रंगों के प्रयोग से चित्र में त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास किया है। जैसे कि हम बाज के पंखों को हवा में फैला देख रहे हैं।

यह चित्र कागज पर बनाया गया है तथा इसमें अपारदर्शी रंगों के साथ स्वर्ण तथा स्याही का भी प्रयोग किया गया है। चित्र में प्रयुक्त किए गए रंग खनिज, पत्थरों, मिट्‌टी, वनस्पति, लाख और अन्य कीटों से निकाले व बनाए गए हैं। पाँच बुनियादी रंगों का प्रयोग किया गया है। सफेद रंग शंख को जलाकर या चॉक मिट्‌टी से, पीला रंग पीली मिट्‌टी से, लाल रंग गेरू से, लाल सीसा व सिंदूर से हरा रंग वनस्पति से प्राप्त किया जाता था।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. 'बाज के साथ राजकुमार' लघुचित्र का माप क्या है?
2. इस चित्र को बनाने में किस माध्यम का प्रयोग किया गया है?
3. 'बाज के साथ राजकुमार' नामक चित्र किस चित्रकार ने बनाया है?

7.3 बारबेट : (हिमालय क्षेत्र में पाया जाने वाला नीली गर्दन वाला पक्षी) जहाँगीर काल

शिक्षार्थी, अब हम कलाकार मंसूर द्वारा बनाई गई एक चिड़िया की पेंटिंग के बारे में जानते हैं।

बुनियादी सूचना

यह लघुचित्र जहाँगीर काल का है। जहाँगीर प्रकृति का महान प्रेमी था। उसके समय में सबसे अधिक चित्र पशु-पक्षियों के बनाए गए। बारबेट नामक यह चित्र प्रसिद्ध चित्रकार उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित किया गया एक महान चित्र है। उस्ताद मंसूर, जहाँगीर के दरबार के ख्याति प्राप्त चित्रकार थे। व्यक्ति चित्र (शबीह) बनाने में सबसे कुशल चित्रकार तो थे ही साथ ही उनका पक्षी-अध्ययन आश्चर्यजनक था। यह लघुचित्र मुग़लकालीन चित्रकला का एक अनुपम उदाहरण है। इस चित्र में पेड़ के तनों, पत्तियों, पहाड़ियों का महीन तथा कोमल रेखाओं द्वारा सजीव चित्रण वास्तव में मुग़ल चित्रकारों द्वारा सूक्ष्म प्रकृति अध्ययन को दर्शाता है, जिससे चित्र में यथार्थवादी प्रभाव उत्पन्न हो गया है।

चित्र 7.3: बारबेट

शीर्षक	:	**बारबेट (नीले गले वाला हिमालयी पक्षी)**
चित्रकार	:	उस्ताद मंसूर
माध्यम	:	टेंपरा
काल	:	जहाँगीर-काल
शैली	:	लघुचित्र
संग्रह	:	विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन, यू.के.

सामान्य विवरण

यह चित्र पक्षी-जीवन के चित्रण का आश्चर्यजनक उदाहरण है। वनस्पति तथा पक्षी चित्रण में उस्ताद मंसूर एक विशेषज्ञ चित्रकार थे। यह पक्षी एक वृक्ष की शाखा पर सौम्य तथा शांत मुद्रा में बैठा है। चित्रकार द्वारा वृक्ष, शाखा और पत्तियों को कोमल रेखाओं तथा रंगों से चित्रित करने के कारण चित्र बहुत ही प्राकृतिक और सहज नजर आता है। मुख्य विषय 'हाशिया' नामक एक जटिल रूप से निष्पादित सीमा द्वारा तैयार किया गया है। आगे की पत्तियाँ बड़ी तथा पीछे की पत्तियाँ छोटी चित्रित करने के कारण चित्र में संपूर्णता का प्रभाव उत्पन्न हो गया है। इस लघुचित्र का संयोजन तथा किनारा बहुत की उच्च कोटि का है। पक्षी और वृक्ष की शाखा तथा चित्रण में यथार्थवादी आकारों व रेखाओं का प्रयोग बहुत की स्वाभाविक है। बारबेट पक्षी की चोंच नुकीली तथा गोल आँखे सतर्क हैं। पक्षी का सिर टहनी की ओर झुका हुआ है। हल्के रंग की पृष्ठभूमि में गहरे रंग का पक्षी बनाया गया है। पंखों में पीली मिट्टी के साथ नीले रंग की छटा प्रदर्शित की गई है। बारबेट के गले पर नीले और सिर चमकदार लाल रंग वस्तुत: आकर्षण के केन्द्र-बिन्दु हैं। किनारे में फूल-बूँटों से अलंकरण है। किनारे सुलेखन एवं अलंकरण में समान दूरी का संतुलन दर्शनीय है। सफेद पृष्ठभूमि पर काली स्याही से लयात्मक तथा घुमावों वाली रेखाओं से सुलेखन किया गया है। फ़ारसी लिपि में किए गए सुलेखन को चित्र में बार्डर की भाँति बनाया गया है। इस लघुचित्र के रंग चमकदार एवं गहरे हैं। बाह्य रेखाओं का अंकन ब्रश द्वारा हरे रंग से किया गया है। यह चित्र कागज पर टेंपरा (जलरंग) पद्धति से बनाया गया है। चित्र में प्रयोग किए गए रंग खनिज पत्थर, मिट्टी, वनस्पति, लाख और अन्य कीटों से प्राप्त किए गए हैं। पाँच बुनियादी रंगों का प्रयोग किया गया है। पुन:चित्रण हेतु पारदर्शी कागज, पशुओं से प्राप्त पारदर्शी अंदरूनी झिल्ली अथवा कागज पर बाह्य रेखा को छिद्रित कर प्रयोग में लाया गया है।

पाठगत प्रश्न 7.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. ''बारबेट'' पेंटिंग ..... का बेहतरीन उदाहरण है।
2. इस लघुचित्र के चित्रकार का नाम ..... है।
3. सुलेखन ..... लिपि में किया गया है।

7.4 मैडोना का चित्र लिए जहाँगीर

बुनियादी सूचना

मैडोना का चित्र हाथ में लिए जहाँगीर का यह चित्र इस बात का सर्वोत्तम उदाहरण है कि मुग़ल शासक सभी धर्मों का आदर करते थे।

यह जहाँगीर का एक शबीह (व्यक्तिचित्र) है, जिसमें वह मैडोना (ईसा मसीह की माँ मरियम) के चित्र के साथ है। यह चित्र जहाँगीर के कला-प्रेम को उजागर करता है, जिसमें उसका स्वयं के व्यक्तिचित्र के हाथ में मडोना का चित्र है। व्यक्तिचित्र का अर्थ है कि चित्रित चेहरे से हम व्यक्ति विशेष को पहचान सकें। अबुल हसन, जिसने यह चित्र बनाया है; जहाँगीर के दरबार का एक प्रसिद्ध और समर्पित चित्रकार था। जहाँगीर ने मैडोना की तस्वीर पकड़ी हुई है। जहाँगीर की माता का नाम मरियम-उज़ ज़माँ था। इस संदर्भ में मैडोना का चित्र संभवत: उसकी माँ का संदर्भ है।

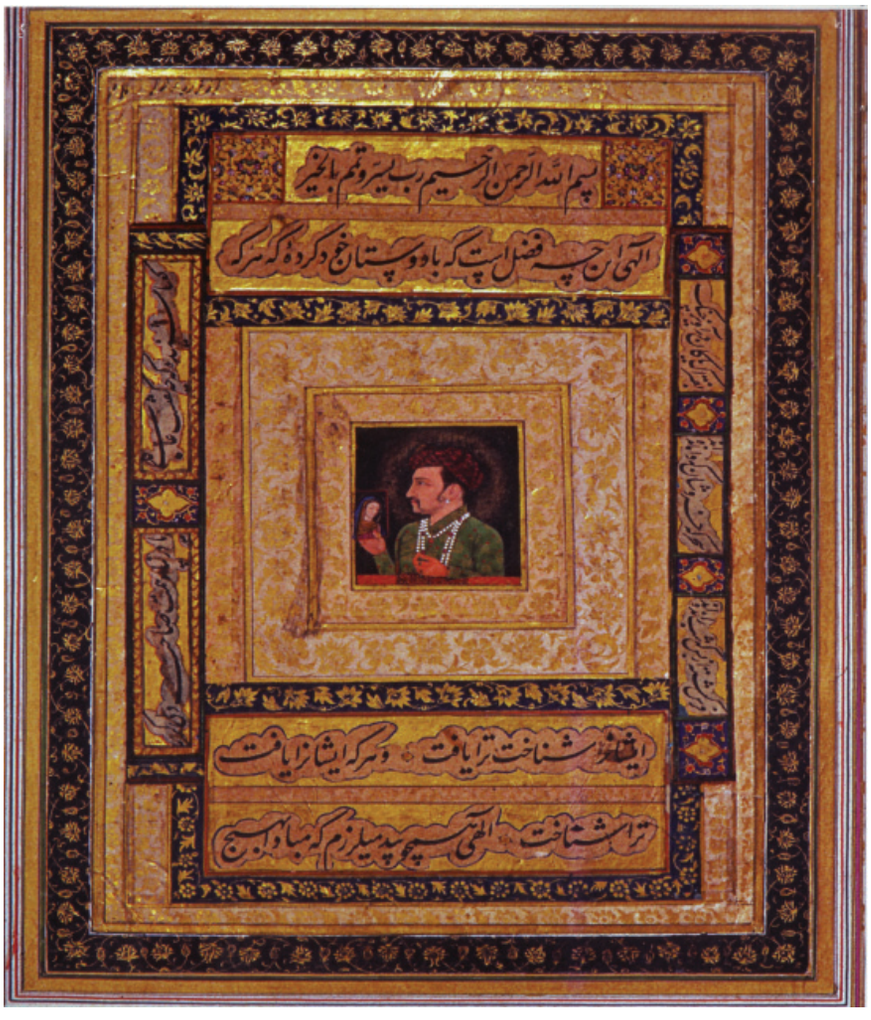

चित्र 7.4: मैडोना का चित्र लिए जहाँगीर

शीर्षक	:	**मैडोना का चित्र लिए जहाँगीर**
चित्रकार	:	अबुल हसन
माध्यम	:	कागज पर टेंपरा
काल	:	जहाँगीर-काल
शैली	:	मुग़ल लघुचित्र
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

असाधारण रूप से कला पारखी दृष्टि के धनी जहाँगीर ने व्यक्तिचित्रों को बहुत महत्व दिया। उसके समय को इस कारण भी याद किया जाएगा कि उसके दरबार के प्रत्येक चित्रकार के बनाए चित्रों में उन चित्रकारों की अपनी छाप को भी पहचाना जा सकता है। उसके काल में अब्दुल हसन तथा बिशनदास नामक चित्रकारों ने व्यक्ति-चित्रण में विशेष दक्षता प्राप्त कर ली थी।

छोटे आकार में बनाई गई यह शबीह, सम्राट जहाँगीर का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति चित्र है। साथ ही विश्व में बनाए गए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति चित्रों में से एक है। अपने पिता की भांति जहाँगीर भी अन्य धर्मों के प्रति उदार था। ईसाई धर्म में उसकी रुचि इससे प्रकट होती है कि वह हाथ में पवित्र मदर मैरी का चित्र लिए है। सम्राट का सिर प्रभामंडल से घिरा है तथा चारों और प्रकाश-किरणें फैल रही हैं। यह चित्र छोटा है तथा चित्र-संयोजन के मध्य में संयोजित किया गया है जिसके कारण वह अन्य लघु चित्रों की तुलना में अनूठा है। एक तरफ देखते चेहरे पर ऊँची नाक बनाई गई है। बड़ा सिर, कोमल रंग तथा सुनहरी आभा, सूक्ष्म विवरण पतली रेखाएँ चित्रित की गई हैं जो जहाँगीर काल की शैली की विशेषताएँ हैं। इस चित्र की विशिष्टता इसमें विविध और अलंकृत 'हाशिए' हैं जो व्यक्ति चित्र के चारों ओर बनाए गए हैं। हाशिए में फूलों के बूटे स्वर्ण से चित्रित किए गए हैं।

अन्दरूनी किनारों को अलग-अलग तरह से सजाया गया है, क्योंकि उनमें सभी ओर से समानता नहीं है। गहरे रंग की किनारों से सजे दो आयताकारों में हल्के रंग की पृष्ठभूमि पर गहरे रंग से सुलेखन किया गया है। ऊपर वाले आयताकार में कोनों के दो खंड दिखाई देते हैं जिनमें फूलों के बूटे चित्रित हैं। उत्कृष्ट रंग मिश्रण, स्पष्ट चित्रांकन, रेखाओं में लयात्मकता, संतुलित संयोजन, सूक्ष्म विवरण, सुन्दर समानुपातिक गोल चेहरा, मनोभावों की अभिव्यक्ति आदि के कारण इस चित्र पर यूरोपीय शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है।

यह लघुचित्र कागज पर टेंपरा पद्धति से बना है। प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त रंगों से कागज पर रंगाकन किया गया है। व्यक्ति चित्र में सुनहरी रेखाओं का प्रयोग सहज ही दिखाई देता है। अनेक माप तथा आकारों के ब्रशों का प्रयोग किया गया है। फारसी बिल्ली अथवा गिलहरी के एक बाल से बने ब्रुश से महीन रेखांकन किया गया है।

पाठगत प्रश्न 7.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. जहाँगीर के हाथ में ..... व्यक्तिचित्र है।
2. इस चित्र के चित्रकार का नाम ..... है।

क्रियाकलाप

आप पुस्तकालय में जाकर मुग़ल लघुकला के संबंध में कुछ जानकारी प्राप्त कीजिए। अब लघुचित्र में प्रयुक्त रंग और शैलियों के विषय के बारे में अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

आपने क्या सीखा

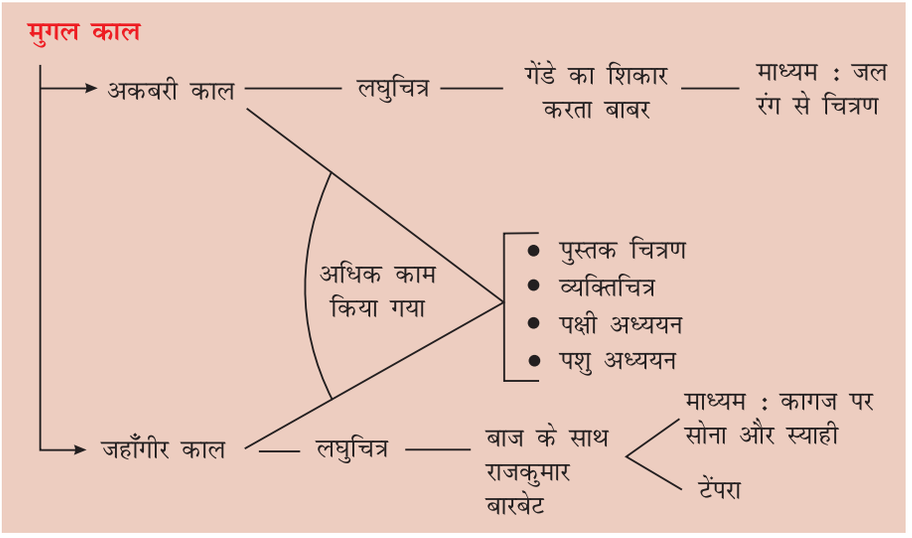

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी :

- किसी भी वस्तु में विशिष्ट मुग़ल शैली का उपयोग करते हैं।
- लघुशैली में मानव और पशु आकृतियों की कलाकृति का निर्माण करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. लघुचित्र बनाने के लिए किस प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है?
2. मुग़ल लघुचित्रों पर किस शैली का प्रभाव पड़ा है? विस्तार से लिखिए।
3. 'गेंडे का शिकार करते बाबर' लघुचित्र के बारे में लिखिए।
4. 'बाज के साथ राजकुमार' नामक चित्र के विषय में संक्षेप में लिखिए।
5. किन्हीं दो मुग़ल लघुचित्रों के शीर्षक तथा उनके बनाने वाले चित्रकारों के नाम लिखिए।
6. मुग़ल-कला क्या है? उसकी मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करिए।
7. 'बारबेट' लघुचित्र में किस तरह के रंगों का इस्तेमाल किया गया है?
8. 'बारबेट' लघुचित्र में कहाँ प्रदर्शित किया गया है?
9. 'बारबेट' चित्रकला के संरक्षक कौन थे?
10. 'बारबेट' लघुचित्र का माध्यम क्या है?
11. 'बारबेट' चित्रकला का काल लिखिए।
12. 'बारबेट' में किन रंगों का इस्तेमाल होता है?
13. जहाँगीर किसलिए जाना जाता है?
14. 'बारबेट' लघुचित्र में सूक्ष्मता को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. (i) शिकार का दृश्य
2. (ii) फारस

7.2

1. 14.92 × 9.53 से. मी.
2. कागज पर अपारदर्शी जलरंग, स्वर्ण तथा स्याही।
3. उस्ताद मंसूर

7.3

1. पक्षी
2. उस्ताद मंसूर
3. फारस

7.4

1. मदर मैरी (मरियम)
2. अबुल हसन

शब्दकोश

प्राकृतिक रंग	खनिज पत्थर तथा मिट्टी जैसे प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाने वाले रंग।
बाह्यरेखाएँ	किसी आकार या आकृति की बाहरी सीमा को निर्धारित करने वाली काल्पनिक रेखाएँ।
लघुचित्र	छोटे आकार के चित्र
व्यक्ति (शबीह) चित्र	व्यक्तिचित्र, जिसमें चेहरे से व्यक्ति, पक्षी, पशु विशेष को पहचाना जा सके। मुखाकृति चित्रण।
टेंपरा	अपारदर्शी जलरंग, जिनमें रंग को स्थाई बनाने हेतु अण्डे का सफेद भाग मिलाया जाता है।
पाण्डुलिपि	हस्तलिखित पुस्तक।